आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2365 • उदयपुर, मंगलवार 15 जून, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

सेवा–जगत्
मानवता का प्रतीक आपका अपना सेवा संस्थान

वैज्ञानिक ने बनाए वाइप व मास्क स्प्रे

जयपुर से ताल्लुक रखने वाले प्रो. लोकेश जोशी की कंपनी ने आयरलैंड में वायरस व बैक्टीरियां को त्वचा से हटाने के लिए दो खास उत्पाद बनाए हैं, एक है एबीडी (एंटी बायोएंजेट डिकंटेमिनेशन डिवाइस) और दूसरी है प्रोशील्ड मास्क स्प्रे। वाइप से त्वचा पर मौजूद हर तरह के बैक्टीरिया, वायरस यहां तक कि कोरोना वायरस को भी हटाया जा सकता है। इसमें एबीडी डिवाइस को अभी यूरोपीय देशों में फ्रंटलाइन कर्मचारी, सैनिक और समुद्री तट पर काम करने वाले लोग इस्तेमाल कर रहे हैं।

Face Shield

फूड प्रोडक्ट और कॉटन से बना एबीडी– यह एक तरह का वाइप (टॉवल) है जो फूड ग्रेड प्रोडक्ट्स से बना है। इसमें कॉटन का इस्तेमाल हुआ है। यह अमरीकी संस्था एफडीए की ओर से प्रमाणित है।

प्रोशील्ड मास्क स्प्रे– प्रोशील्ड भी प्राकृतिक पदार्थों से बना है। यह एक तरह का स्प्रे है, जो मास्क पर एक लेयर देता है, जो मास्क पर एक लेयर बना देता है, जिसमें बैक्टीरिया और वायरस फंस जाते हैं। उसके बाद उस मास्क को धोकर फिर इस्तेमाल किया जा सकता है।

हर दिन हजारों संक्रमितों की मदद कर रहा है नारायण सेवा संस्थान

मानव सेवा में हमेशा अग्रणी नारायण सेवा संस्थान ने कोरोना की दूसरी लहर से प्रभावितों के लिए विभिन्न सेवा प्रकल्प शुरू किए है। रोजाना हजारों संक्रमितों और उनके परिजन इनसे लाभान्वित हो रहे है। संस्थापक पद्श्री कैलाश जी मानव के निर्देश पर प्रशांत जी अग्रवाल के नेतृव्य में पिछली 17 अप्रेल से घर–घर भोजन, कोरोना दवाई किट, एम्बुलेंस ओर ऑक्सीजन की निःशुल्क सेवाएं दी जा रही है। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि ये सेवाएं के अलावा संस्थान की उत्तरप्रदेश में मेरठ और महाराष्ट्र के परभणी जिले में भी संचालित की जा रही है। संस्थान अब तक 59044 भोजन किट, 273 से अधिक ऑक्सीजन सिलेंडर, 2656 कोरोना दवाई किट और 334 जन को एम्बुलेंस की फ्री सेवाएं दे चुका है। सेवाकार्यों में संस्थान की 80 सदस्यीय टीम जुटी हुई है। हेल्पलाइन नंबर पर सुचना मिलते ही टीम सदस्य बीमार को सेवा में तत्काल पहुंचते है। उन्होंने बताया कि यह सेवाएं दूसरी लहर की समाप्ति तक निरन्तर रहेगी। बेरोजगार और मजदूर भाइयों के लिए भी राशन पहुंचाने की सेवा शुरू की। सेवा प्रकल्पों को सुचारू रखने के लिए निदेशक वंदना जी अग्रवाल और पलक जी अग्रवाल की देखरेख में एक विशेष सेल गठित किया गया है।

एक वक्त के भोजन को भी मोहताज सारा परिवार, दुःखी रामदास को मिली मदद

मानवता को झकझोर देने वाली दर्द भरी दास्तां है गुप्तेश्वर के पास बिलिया गांव में रहने वाले रामदास वैष्णव की। रामदास वैष्णव कारीगर है, जो अन्य श्रमिकों की तरह रोज कमाते और खाते है! कोरोना में उनका काम बंद है। परिवार के 6 सदस्यों के सामने भूख को शान्त करना मुश्किल हो गया उन्होंने नारायण सेवा संस्थान से मदद की गुहार लगाई।

संस्थान ने उनकी मदद करते हुए एक माह का राशन प्रदान किया। रामदास राशन पाकर संतुष्ट हुए ओर ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उनकी आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि ऐसे ही 12 अन्य गरीब मजदूर परिवारों को भी निदेशक वंदना अग्रवाल की टीम ने राहत पहुचायी।

संस्थान जरूरतमंदो के घर–घर भोजन, दवाई और ऑक्सीजन सिलेंडर की निःशुल्क सेवाएं दे रहा है। जिससे हजारों लोग रोज लाभान्वित हो रहे हैं।

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कोरोना संक्रमितों के सेवार्थ नि:शुल्क सेवाएं

ऑक्सीजन सिलेंडर सेवा

अब तक नि:शुल्क 273 ऑक्सीजन सिलेण्डर दिये

‘घर – घर भोजन’ सेवा

अब तक घर–घर नि:शुल्क 59,044 भोजन पैकेट वितरित

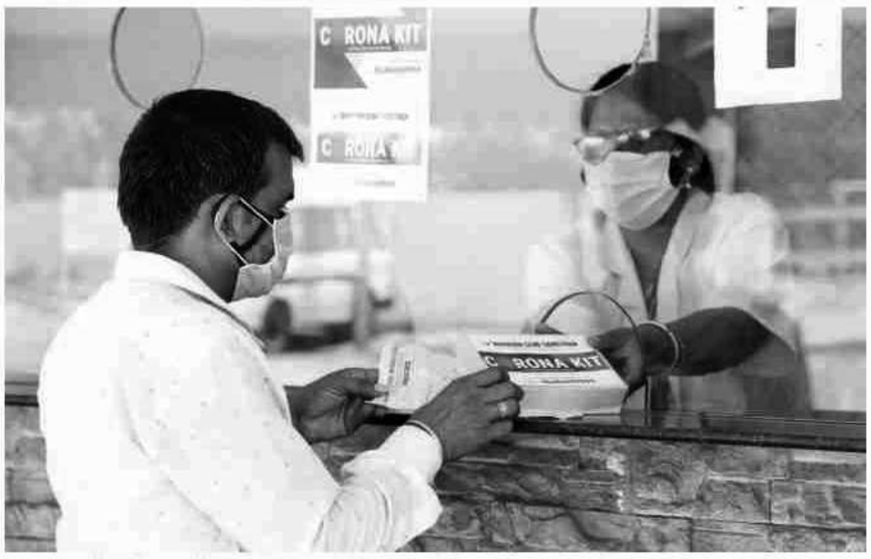

कोविड पॉजिटिव बीमारों को कोरोना किट सेवा

अब तक नि:शुल्क 2656 कोरोना किट संक्रमितों को दिये

बीमार को एम्बुलेंस सेवा

बीमार को हॉस्पीटल पहुँचाते संस्थान कर्मी अब तक 334 जन लाभान्वित

हैड्रोलिक बेड सेवा

158 जन को हैड्रोलिक बेड कराये उपलब्ध

नि:शुल्क राशन सेवा

कोरोना प्रभावित 30,445 मजदूर परिवारों को राशन वितरण

अपनी जुबानी

संस्थान की कोरोना सेवाओं से लाभान्वितों के अनुभव

मैं और मेरे परिवार के अन्य सदस्य माता–पिता, पत्नी और दोनों बहने कोरोना पॉजिटिव हो गए। हमनें डॉक्टर्स की सलाह पर होम आइसोलेट रहने का फैसला लिया। लेकिन हम सभी संक्रमितों के सामने दोनों समय के भोजन की समस्या थी। हमारा खाना कौन बनाएं? तभी हमें नारायण सेवा के घर–घर भोजन सेवा की जानकारी मिली।

संस्थान की हेल्पलाइन नम्बर पर कॉल किया। हमें 6 पैकेट भोजन भेजना शुरूकर दिया। वास्तव में खाना– बहुत स्वादिष्ट था। अच्छे से पैकिंग में सुरक्षित पैकेट 15 दिन तक निरन्तर मिलता रहा स्वादिश्ट भोजन। अब हमारा पूरा परिवार पूर्ण स्वस्थ हो गया। इस सेवा के लिए संस्थान का बहुत आभार।

– अंकित माथुर, उदयपुर

मेरे पिता जी 5 दिन पहले कोरोना संक्रमित निकले। उन्हेंघर पर रखकर ईलाज शुरू किया लेकिन उनका ऑक्सीजन लेवल गिरने लगा। हमारी फिक्र बढ़ने लगी। हॉस्पीटल में ऑक्सीजन बेड के लिए प्रयास किया पर मिला नहीं। मदद के लिए नारायण सेवा संस्थान से सम्पर्क किया। तो उन्होंने ऑक्सीजन सिलेन्डर उपलब्ध करा दिया। 2–3 दिन ऑक्सीजन पर रहने के बाद उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ। अब पिता जी पूर्ण कुशल है। विपदा की घड़ी में संस्थान की मदद के लिए हम सदैव कर्तज्ञ रहेंगे।

– मोहन मीणा, डबोक

सम्पादकीय

किसी का भी जीवन हर दृष्टि से परिपूर्ण नहीं होता है। हरेक व्यक्ति में अनेक खूबियाँ होती हैं तो अनेक कमियां भी होती हैं। यह स्वाभाविक है। हमारी दृष्टि ज्यादातर लोगों की कमियों पर जाती है। किसी भी व्यक्ति में कमी निकालनी हो तो कोई भी यह कार्य कर सकता है। लेकिन यह दृष्टि ठीक नहीं मानी जा सकती है। जीवन हमें मिला है विधेयक दृष्टिकोण को विकसित करने के लिये। यह विधेयकता तभी फलीभूत होगी जब कि हमारी निषेधात्मकता व नकारात्मकता हमसे छूट जाये। जैसे हर व्यक्ति में बुराई हो सकती है पर हम बुराई क्यों देखें, अच्छाई क्यों नहीं देखें हम जैसा देखने की आदत बनायेंगे, वैसा ही हमारा स्वभाव बनता जायेगा, वैसा ही हमारा व्यक्तित्व बनता चला जायेगा। निश्चित रूप से हम बुरे व्यक्ति नहीं बनना चाहते हैं तो सर्वप्रथम हम यही करें कि बुरा देखना व बुराई ढूंढ़ना बन्द कर दें। जिस दिन हम किसी की बुराई देखना छोड़ देंगे उसी दिन से हममें अद्भुत सकारात्मकता का संचरण होने लगेगा।

कुछ काव्यमय

**दुनियां में
लोगों की कमियां
ढूँढ़ना बहुत सरल है।
पर सच तो यह है
कि ऐसी आदत बनना
परमात्मा और प्रकृति के प्रति
हमारी असफलता है
उनके साथ छल है।**

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

सेवा का मर्म

ब्रह्माण्ड कहता है– मेरे से मांगो, मेरे पर यकीन करो कि तुम जो मांगोगे, मैं दे दूंगा। तुम अविश्वास मत करना, किन्तु–परन्तु मत लगाना–लाला। लेकिन–वेकिन मत लगाना। यदि–वदि मत लगाना। ब्रह्माण्ड को कहना– हे ! ब्रह्माण्ड, मैं आपका काम करूंगा, मैं प्रसन्नता रखूंगा, मैं बुजुर्गों की सेवा करूंगा मेरी माता की सेवा करूंगा। यक्ष ने कहा था– युधिष्ठिर, धरती से कौन भारी है ? युधिष्ठिर तत्काल कहता– माता। हे माते! मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा,माँ आपकी औषधि का खयाल रखूंगा, माँ मैं आपको सुखी रखूंगा, जिससे दिव्यांगों के ऑपरेशन होंगे, माँ, मैं इनको खड़ा करवा दूंगा। माँ मैं आपकी आज्ञा पर अपना शीश झुकाता हूँ।

आकाश से बड़े पिता जी, हे पिताश्री, आपकी अंगुली पकड़कर चलता था, मुझे भय लगता था, कहीं मैं अपना हाथ न छोड़ बैठूं, मैंने कहा – पिताजी, आप मेरी अंगुली पकड़ लीजिए, और जब दादी माँ ने पोते को कहा– लाला, ये युग अच्छा है। लेकिन कभी– कभी खराबियाँ पैदा हो जाती है, कभी कोई कपूत निकल जाते हैं। हमारा देश श्रवण कुमार का देश है। जहाँ करोड़ों बच्चे अपने माता– पिता की बहुत सेवा करते हैं, वहाँ एक दादी का चश्मा टूट गया, चार बार पोते को कहा, तीन बार बेटे को कहा, लेकिन चश्मा नहीं आया, चश्मा नहीं आया।

बच्चों के शूट आ गये, पत्नी की साड़ियाँ आ गयी, घर पर खिलौने आ गये। लेकिन दादी का चश्मा नहीं आया, दादी जी बाथरूम में गयी–बिना चश्मा के गिर पड़ी। गिरते ही चोट लग गई, और प्राण पखेरू उड़ गये। जब दादी जी के प्राण प्रखेरू उड़े, फोन घन–घनाने लगे, ब्याईजी को फोन करना, अरे, हमारे दादी का मोक्ष हो गया, कल हम बड़े गाजे–बाजे के साथ ले जायेंगे, बेशर्मों, जब–तक दादी घर में थी, तब आपने टूटा हुआ चश्मा ठीक नहीं करवाया। ये कैसा दुर्भाग्य आ गया?

–कैलाश 'मानव'

संगत का असर

किसी शहर में एक सेठ रहता था। आप और हम जानते हैं। संगत का कितना असर होता हैं। संगत का असर समझने के लिए ये छोटा सा प्रसंग समझना जरूरी है। सेठ का एक बेटा था। बेटे की दोस्ती कुछ ऐसे लड़कों के साथ थी। जिनकी आदत बहुत खराब थी। सेठ को ये सब अच्छा नहीं लगता था। सेठ ने अपने बेटे को समझाने की बहुत कोशिश की पर सेठ कामयाब नहीं हुए। जब भी सेठ उसको समझाने की कोशिश करते, बेटा कह देता मैं उनकी गलत आदतों को नहीं अपनाता। इस बात से दुःखी होकर सेठ ने अपने बेटे को सबक सिखाना चाहा। एक कोई उदाहरण देना चाहा। उसके हृदय में उतर जाये और वो बुरी संगत छोड़ दे।

सेठजी बाहर से कुछ सेब खरीद कर लेकर आये। उन्होनें एक साथ सेब को रखे। सेब में एक सड़ा हुआ सेब भी लेकर आये। ला कर सेठ ने अपने लड़के को सेब दिए। कहा इनको अलमारी में रख दो। इन सबको हम कल खायेंगे। जब बेटा सेब देखने लगा तो एक सेब सड़ा हुआ देखकर सेठ से बोला ये सेब तो सड़ा हुआ हैं। सेठ ने बोला कोई बात नहीं कल खायेंगे, कल देखेंगे। अभी तुम रख दो।

दूसरे दिन सेठ ने अपने बेटे से सेब निकालने को कहा। उसके बेटे ने जब सेब निकाली, तो आधे से ज्यादा सेब सड़े हुए थे। सेठ के लड़के ने कहा इस एक सेब ने तो बाकी सेबों को सड़ा दिया हैं। तब सेठ ने कहा ये सब संगत का असर है।

बेटा इसी तरह गलत संगत से अच्छा आदमी भी खराब हो जाता है, गलत काम करने लगता हैं। गलत संगत को छोड़ दो बेटा, बेटे के समझ में बात आ गयी। और उसने वादा किया कि अब वो गलत संगत में नहीं जायेगा। हमेशा अच्छी संगत में ही रहेगा। आप सबको और हम सबको ध्यान देना चाहिए।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

1973 में उसका स्थानान्तरण पाली मारवाड़ हो गया। पोस्ट मास्टर मुम्बई से आये थे। उन्हें नमस्कार किया तो बोले –कैसे हो भाई ? कैलाश ने सहजता से कह दिया कि –आपकी मेहरबानी चाहिये साहब। यह सुनते ही उन्हें गुस्सा आ गया। कैलाश हतप्रभ रह गया कि उसने ऐसी क्या बात कर दी जिससे साहब नाराज हो गये।

तीसरे दिन जाकर कैलाश को पता चला कि पोस्ट मास्टर बोहरा समाज के थे और उनकी पत्नी का नाम मेहरबानी था। इसके बाद कैलाश ने ध्यान रखा कि उनके सामने कभी मेहरबानी शब्द का उपयोग नहीं हो, कृपा है कह कर काम चला लो।

कैलाश का वेतन महज 208 रु. प्रति माह था, 50 रु. का मनी आर्डर वह पिताजी को भेज देता था, बचते 150 रु. उससे पत्नी–बच्ची के साथ गुजारा नहीं हो पाता था। उसे फिल्म देखने का भी शौक था, महीने में एक दिन परिवार को ले पिक्चर दिखाने भी जाता। तंगी की इस हालत में पत्नी कमला ने सिलाई का कार्य कर कुछ पैसा कमा लेने की सोची। कमला के पिता की अजमेर में रेडिमेड वस्त्रों की दुकान थी, घर पर सिलाई का काम होता ही था इसलिये थोड़ी बहुत सिलाई उसे आती ही थी।

सिलाई मशीन डेढ–दो सौ रु. के बीच आती थी। इतने पैसे कैलाश के पास थे नहीं, दुकानदार से बात की तो वह 20 रु. महीने की किष्तों पर मशीन देने को तैयार हो गया। कमला ने सिलाई का काम शुरू किया, धीरे धीरे काम बढता गया तो वह देर रात तक सिलाई करने लगी। कमला की देखा देखी कैलाश ने भी सिलाई सीख ली और पत्नी के काम में हाथ बंटाने लगा।

कमला ने कपड़ों की कटिंग हेतु गत्तों के फर्मे बना रखे थे। ये गत्ते कपड़ों के थान से मिल जाते थे। इन गत्तों को देख कैलाश को एक विचार सूझा, क्यूं नहीं इन गत्तों पर सद्वाक्य लिख कर जगह जगह लगा दिये जायें ? कैलाश की ऐसे कार्यों में बहुत रूचि थी।

अंश-35

घिसट घिसट कर संस्थान में आया लौटते वक्त अपने पैरों पर खड़ा था

सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) जिले के गांव भाबसी निवासी श्री धर्मवीर सिंह के पुत्र अर्पित जन्म से ही एक पांव में घुटनों से नीचे तक दिव्यांग था। गरीबी के कारण न उसका इलाज हो सका और न ही उसे पढ़ने के से भेजा जा सका। माता– पिता बच्चे की इस हालत और उसके भविष्य को लेकर सदैव चिंतित रहते। घर का माहौल हर समय उदासी से भरा रहता था। धर्मवीर बताते हैं एक दिन उन्हें किसी परिचित में नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांगों की निःशुल्क चिकित्सा, कृत्रिम अंक लगाने और सहायक उपकरण दिये जाने की जानकारी दी। उसके बाद वे बेटे को लेकर उदयपुर आए और संस्थान के डॉक्टर से मिले जिन्होंने दिलासा देते हुए कहा कि आप बेटे को गोद में उठा कर लाए है किंतु वह अपने पांव पर खड़ा होकर चलते हुए अपने घर में प्रवेश करेगा। कुछ दिनों के इलाज के बाद उसे विशेष कैलीपर पहनाया गया। अर्पित जब पिता के साथ पुनः अपने घर के लिए रवाना हुआ तब यह संस्थान के अस्पताल से चलते हुए ही बाहर निकला। पिता ने कहा मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। अब इसके लिए मैं वो सब– कुछ करूंगा जिसका सपना देखा करता था।

लौंग की उपयोगिता

लौंग की छोटी–सी काली कली गुणों की खान है। यह कटु, चरपरी, हल्की, कसैली होती है। यह नेत्रों के लिए अत्यंत गुणकारी होती है। यह भोजन की सूचि बढ़ानी है। यह कफ–पित्त दोष को शांत करने वाली तथा दूषित रक्त को शुद्ध करने वाली होती है।

लौंग में सूक्ष्म जीवों को मारने की शक्ति होती है, इसलिए 'ऐंटीसैप्टिक' और ऐंटी बायोटिक' दवाओं में लौंग का इस्तेमाल होता है। टूथपेस्ट और माउथवाश का तो यह खास अंग है। मुंह और गले में लगाई जाने वाली तमाम दवाओं में लौंग का तेल मिलाया जाता है।

घरेलू इलाज

खांसी में लौंग को अंगारों पर भून कर फूल जाने के बाद उसे मिश्री के टुकड़े के साथ मुंह में रखने से खांसी बंद हो जाती है। भुनी लौंग को शहद के साथ दिन में तीन बार चाटने से खांसी में आराम मिलता है।

दो लौंग मुंह में रखकर धीरे–धीरे चबाने से या पानी के साथ पीसकर गुनगुना कर सेवन करने से जी मिचलाना बंद हो जाता है।

चार–पांच लौंग को पानी में उबालें। जब उसमें पानी आधा शेष रह जाए तो उसमें मिश्री या शक्कर मिलाकर पीएं। इससे उल्टी में लाभ होगा। इस काढ़े से सिरदर्द में भी आराम मिलता है।

लौंग व हरड़ को पानी में उबाल कर उसमें थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर पीने से अपच, अजीर्ण दूर होता है।

पेट का भारीपन, अरुचि, अपचन, डकारों आदि में लौंग के तेल का सेवन फायदेमंद होता है।

दांत के दर्द में लौंग के तेल का फोहा लगाने से आराम मिलेगा। तेल न हो तो लौंग को दांतों के बीच दबाकर खाएं।

पायरिया होने पर दांतों पर लौंग के तेल की मालिश करने और लौंग चूसते रहने से फायदा होता है। इससे सेवन से मुंह की दुर्गंध चली जाती है।

लौंग को भूनकर चाटने से गले की खराश दूर होती है।

भिगोई हुई लौंग को पीसकर शीतल पानी और मिश्री के साथ पीने से हृदय की जलन दूर हो जाती है। संधिवात दर्द, सिर शूल तथा दांत दर्द में लौंग का तेल आराम पहुंचाता है। गठिया में लौंग के तेल की मालिश लाभकारी होती है।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्धटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999
आपके अपने संस्थान का पता
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अनुभव अमृतम्

1970 की रिडेक्स सर्विस स्याही बन रही है। स्याही खोखों में भरकर के जा रही हैं। पत्तियाँ लग रही है, मशीन लाये पत्तियाँ लगाने की। पत्तियाँ कस के लगायी जा रही है, कीलियाँ ठोकी जा रही हैं। नवरत्न जी साहब आनन्द–परमानन्द के इन क्षणों में हरि भाईसाहब और रिडेक्स सर्विस भगवान ने दिया था, और भगवान ने ले लिया। मदनगंज, किशनगढ़ पेपर गोंद का काम, भीलवाड़ा भेजते ट्रान्सपोर्ट कम्पनियों से तुलवा रहे हैं। पेमेन्ट कर रहे हैं बोरे भरकर ले जा रहे हैं। मदनगंज, किशनगढ़ वाह। किशनगढ़ की बड़ी मिल भाईसाहब ने सर्विस छोड़ दी, राजस्थान स्पिनिंग मिल की। कॉटन वेस्ट जो रजाई में भरी जाती। कॉटन थोड़ी हल्की टाईप की बढ़िया टाईप के कॉटन का तो सूत बन जाता है। उससे कपड़े बनते हैं, मिलों में जाते हैं। शर्ट, पेन्ट, कमीज, धोती, चद्दर सब बनते हैं, और जो हल्की टाईप की कॉटन होती है– रजाई में, गद्दों में, तकियों में भाईसाहब ये काम करने लगे। जगदीश आकाश काम करने लगा। भाईसाहब आप मेरे लिए पेपर कोण ले आईये, जरुर–जरुर। उन्हीं दिनों में जब मैं किशनगढ़ था। तब भाईसाहब का फोन आया। मोबाईल फोन तो था नहीं। लेण्ड लाईन पर आया। अरे! कैलाश पोस्ट ऑफिस में भारत सरकार का एक पत्र आया हैं। उसमें लिखा आपका अपोईन्टमेन्ट कर रहे हैं। आपका सलेक्शन कर लिया गया है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 162 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023